

# भारतीय भाषा और साहित्य में मध्य एशियाई तत्व का समागम

Surjeet Kumar Singh\*

Research Scholar, Department of Ancient Indian History Archaeology and Culture, University of Mithila,  
Kameshwaranagar, Darbhanga

सार – पश्चिम तथा मध्य एशियाई लोगों का भारत पर आक्रमण और आधिपत्य से भारतीय भाषा और साहित्य भी प्रभावित हुआ था। चूँकि इन दोनों ओर से आने वाले लोगों की अपनी भाषा और साहित्य भी थी, जिसको वे हटा कर भारतीय भाषा में नहीं समा सकते थे। इसलिए लम्बी अवधि तक उनका भारतीय भाषा और साहित्य से समागम चलना एक ऐतिहासिक प्रक्रिया प्रतीत होती है, खासकर पश्चिमोत्तर भारत और पश्चिम भारत में जो भाषाई उच्चारण में अंतर आदि विद्यमान हैं, वह इस समागम का परिणाम रहा था। अतः यहाँ पश्चिम और मध्य एशिया से आनेवाली आक्रमक और सत्ता स्थापित करने वाली जातियों के भारतीय भाषा और साहित्य के प्रभाव दूढ़ने का प्रयास किया जा रहा है।

-----X-----

**(क) यूनानी संस्कृतिकवाद (Helenism) के मिथक का प्रचार:**

विशाल मौर्य साम्राज्य के चलते पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त पर कड़े नियंत्रण के कारण उस ओर से कोई आक्रमण या घुसपैठ नहीं हो पाया था, किन्तु उसके कमजोर होते ही पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त पर सर्वप्रथम बैक्ट्रियन (ग्रीक) का आक्रमण और आधिपत्य हुआ था।[1] बैक्ट्रियन ग्रीक आक्रमणकारियों ने सिन्ध और पंजाब तक के भू-भाग को अपने अधीन कर लिया था और लगभग सौ से ऊपर वर्षों तक उस क्षेत्र पर शासन करते रहे। अतः इतनी लम्बी अवधि के दौरान बैक्ट्रियन ग्रीकों की भाषा और साहित्य का इस क्षेत्र पर प्रभाव पड़ना लाजमी था।

इतिहासकार बैक्ट्रियन ग्रीक आक्रमण और आधिपत्य के प्रभाव को काफी उछाल कर दिखाने का प्रयास करते रहे हैं।[2] यह सही है कि ईसा से पूर्व की शताब्दियों में यूनान, ईरान और भारत में उच्च सांस्कृतिक विकास हुआ था। किन्तु सिकंदर के आक्रमण और आधिपत्य से ईरान तथा पश्चिमोत्तर भारत पर यूनानियों के आधिपत्य से एक मिश्रित संस्कृति का उदय हुआ था। इस नई संस्कृति को बैक्ट्रियन ग्रीक लोगों ने 'हेलेनवाद' का नाम दिए थे।[3] हेलेम यूनान शिक्षा संस्कृति की देवी मानी जाती थी, जैसा कि भारत में सरस्वती मानी जाती रहा है। अतः हेलेनवाद हु-ब-हु यूनानी संस्कृति नहीं रह गई थी। यूनान के बाहर ईरानी मध्य एशियाई और द० पू० एशियाई के समागम से

उत्पन्न लिया हुआ। यह संस्कृति यूनानी एशियाई का समिश्रित रूप था।[4] इसी का प्रभाव पड़ा था, जो भारतीय संस्कृति से मिलकर एक नई संस्कृति को जागृत किया था, इसी के प्रभाव को यहाँ पर दर्शाना है चूँकि प्रारंभ में पाश्चात्य इतिहासकार यह उछालते रहे कि भारत की प्राचीन संस्कृति में जो कुछ उत्कृष्ट पहलुएँ रही हैं, वह सिकंदर के आक्रमण के बाद यूनानी प्रभाव का परिणाम था, अतः पाश्चात्य इतिहासकारों द्वारा हेलेनवाद के मिथक का परीक्षण होना आवश्यक है।

पिछले अध्यायों में यह दूढ़ने का प्रयास किया गया है कि बैक्ट्रियन जो आने पर यवण कहलाये थे, का भारतीय समाज और धर्म में लगभग सौ वर्षों के दरम्यान एसा समागम हुआ कि वे अपना स्वतंत्र अस्तित्व खो बैठे और भारतीय संस्कृति में विलीन हो गये। यही कारण है कि बाद के कालों में बैक्ट्रियन ग्रीक या, हिन्द यूनानीयों का कोई स्वतंत्र अस्तित्व भारत के प्राचीन इतिहास देखने को नहीं मिलता है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि ये लोग पुर्णतः भारतीय समाज और संस्कृति में विलीन हो गये थे।[5] इस बात को कुछ अहम बादी भारतीय इतिहासकार भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता के समक्ष उनका आत्मसमर्पण मानते रहे हैं। किन्तु जो अन्य तथ्य और उससे सम्बंधित अन्य साक्ष्य उपलब्ध हुए हैं, उससे स्पष्ट होता है कि बैक्ट्रियन ग्रीक या हिन्द यूनानी (Indo-Greek) सिर्फ देह लेकर भारतीय समाज में विलीन

नहीं हुए थे, बल्कि अपनी सांस्कृतिक समृद्धता से कई विलक्षणताओं को भारतीय समाज और संस्कृति में योगदान दिया था। यहाँ हम खासकर उनकी भाषा और साहित्य का भारतीय भाषा साहित्य में समागम के साक्ष्य को ढूँढने का प्रयास कर रहे हैं।

गार्गी संहिता[6] में कहा गया है कि “यद्यपि बैक्ट्रियन ग्रीक (यवण-यत्र धावति तेजः) को “मलेच्छ” (जिसको छुआ नहीं जाता है) कहा गया था, किन्तु वे लोग ज्योतिष के अच्छे ज्ञाता होने के कारण ऋषियों की तरह पूज्य हैं। मालन्द पनहों[7] (बैक्ट्रियन) राजा मिनान्दर का प्रश्न से ज्ञात होता है की इण्डोग्रीक के पास एक अपना लिपि भाषा और साहित्य था, जिसके उपयोग का प्रमाण उनके सिक्कों पर मिलता है। यह लिपि लैटिन थी, जो एशिया में प्रचलित होने में अपना प्राचीनतम रूप से बदलकर नए रूप में प्रयुक्त होने लगी थी। यूनानियों का यह लेखन शैली एशियाई प्रभाव का द्योतक थी, कि उनकी लिपि खड़ी अक्षर में प्रयुक्त होने लगी थी, जैसा कि भारत की दो लिपियां ब्राह्मी और खरोष्ठी लिखी जाती थी। इससे भी ब्रह्मी से अधिक खरोष्ठी लिपि के लेखन शैली का बैक्ट्रियन ग्रीक शैली पर प्रभाव पड़ा था, और ब्राह्मी लिपि बैक्ट्रियन ग्रीक से प्रभावित हो दायें की ओर मुड़ने लगी थी।[8] इस तरह बैक्ट्रियन ग्रीक भारतीयों से और भारतीय इण्डोग्रीक लिपि शैली से प्रभावित हुई थी।

इतना ही नहीं उच्चारण के अनुसार वर्णों का संयोग बैठाने की प्रक्रिया इण्डोग्रीक लेखन शैली से प्रभावित हुआ था। अशोक के अभिलेख की ब्राह्मी या खरोष्ठी लिपि बाद के ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपि में जो उदविकास पाया जाता है वह बहुत हद तक बैक्ट्रियन ग्रीक लेखन शैली से प्रभावित है।[9] अतः यह मानने में अब हिचकिचाहट नहीं रह गई है कि भारत की दोनों प्राचीन लिपि के उदविकास में यूनानी लिपी का योगदान रहा था।

जहाँ तक भारतीय भाषा और साहित्य पर इण्डो यूनानी प्रभाव का प्रश्न है इसे कुछ पाश्चात्य इतिहासकार चढ़ा-बढ़ा कर दिखाने का प्रयास करते रहें हैं। यह कहना बिल्कुल गलत है कि भारतीयों में हु-ब-हु यूनानी शब्दों का अनुकरण किया था, बल्कि जो साक्ष्य विद्यमान है, उससे आभाषित होता है कि यूनानी ने खासकर अपने मुद्रा लेख पर जो लेख डलवाया था, उससे यूनानी शब्द का हु-ब-हु भारतीय शब्द नहीं मिलता है। उदाहरण के लिए बैक्ट्रियन ग्रीक सिक्को पर महाराजा शब्द के लिए “बेशिलिओस” और महाराजाधिराज शब्द के लिए “बेशिलीओन” में फर्क है। इसी तरह यूनानी धार्मिक उपाधि “सोटेरस” का खरोष्ठी में “त्रतरस” या “धर्मिकस” शब्द पाया जाता है।[10] किन्तु इसमें जो भाव निहित है, उससे भारतीय

भाषा में नये शब्दों का उद्भव होने में काफी योगदान रहा था। इसी तरह के अन्य यूनानी शब्द के प्रभाव से भारतीय भाषा के उद्भव होने में काफी योगदान मिला होगा। इसे ईसा पूर्व दूसरी और प्रथम शताब्दी में लिखे गये संस्कृत और पाली साहित्य में भी ढूँढा जा सकता है। इस तरह हिन्द यूनानी की लिपि और भाषा का भारतीय लिपी और भाषा पर प्रभाव होना माना जाता है।

प्राचीन भारतीय साहित्य पर काम करने वाले विद्वानों ने यह भी खोज करने का काम किया है, कि हेलनवाद का प्रभाव साहित्य के लेखन शैली पर भी पड़ा था। कार्लबेबर[11] के अनुसार संस्कृत नाटक का उदय यूनानी नाटकों से हुआ था। प्लूटार्क और एरियन के उल्लेख के आधार पर यह माना जाता है यूनानी महाकवि होमर के काव्य इलियड और ओडिसी से भारतीय महाकाव्य महाभारत और रामायण की कथा प्रभावित है।[12] जैकोबी[13] का मानना है कि भारतीय काव्यकारों ने गद्य - पद्य संरचना को यूनानियों से सीखा था। संस्कृत नाटक में यवनिका का प्रयोग यूनानी नाटक से लिया गया माना जाता है। कुछ विद्वान यह भी मानते हैं कि भारत में युद्ध और योद्धा की काव्यात्मक लेखन जो महाभारत और रामायण में भी पाया जाता है, इलियड से प्रभावित है। इसी तरह होमर का ओडिसी काव्य में द्राव्य की रानी की अपहरण और वापसी का युद्ध उसी तरह है जिस तरह रामायण में सीता का हरण और राम के द्वारा वापसी ही कथा है। कुछ विद्वान यह भी मानते हैं कि भारतीय लोग भी होमर की कविता को अपनी भाषा में अनुवाद कर गीत गाया करते थे।

यूनानी साहित्य का भारतीय साहित्य पर उपर्युक्त प्रभाव को कई इतिहासकार अतिशयोक्ति मानते हैं। ऐसे विद्वानों का मानना है कि भारतीयों के पास स्वयं की समृद्ध साहित्य परंपरा थी। बल्कि भारतीयों ने ही यूनानी साहित्य को प्रभावित किया था।[14] पाश्चात्य लेखक लुडविज[15] अपनी रचना “ए मेसेज टू प्लूटो” में स्पष्ट किया है कि ईसा पूर्व दूसरी और प्रथम शताब्दी तक भारत ज्ञान की विभिन्न विद्याओं में काफी परिपक्व हो गया था। ज्योतिष, गणित, खगोलविद्या, राजनीतिशास्त्र और औषिधी विज्ञान आदि में यूनान से अधिक चढ़ा-बढ़ा था। अतः यूनानियों ने ही भारतीयों से इन विद्याओं को सीखा था किन्तु इस मत के विपरित यह भी माना जाता है कि यूनानी लोक ईसा के पूर्व चौथी सदी से लेकर ईसा के पूर्व प्रथम शताब्दी तक के लगभग चार सौ वर्षों के दरम्यान अपनी कई विद्याओं और उसके साहित्य से पूर्वी दुनिया को प्रभावित किया था। यह देखने में

भी स्वभाविक लगता है कि यूनानी जो चार सौ वर्षों तक भारतीय सम्पर्क में थे, उनकी भी समृद्ध साहित्य समृद्ध से भारतीय महाकाव्य अछूता नहीं रहा होगा। अतः यह मानने में संकोच न ही होना चाहिए कि प्राचीन भारतीय लिपि, भाषा और साहित्य यूनानी प्रभाव से अछूता रहा बल्कि प्राचीन भाषा और साहित्य पर काम करने वाले लोगों को इस और भी खोज करनी होगी, जैसा कि विन्टरनीज ने माना है कि प्राचीन जगत में यूनान और भारत सभ्यता के दो ऐसे विकसित केन्द्र थे जहाँ पर प्राचीन दुनियाँ की बुद्धि, विद्या और विज्ञान आपस में संयोग कर रहा था। इस संयोग के यद्यपि बहुत कम बातों की जानकारी उपलब्ध हो पा रही है। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि इतनी लम्बी अवधि का सम्पर्क और सहयोग निरर्थक रहा होगा, बल्कि दोनों अवश्य ही एक दूसरे से लाभान्वित हुए होंगे। चूंकि यूनानी लोग जो पूर्वी एशिया से आये थे, वे सब के सब लौटकर यूनान नहीं गए, उनका व्यापारी वर्ग ही आता-जाता रहा, जिसके माध्यम से दोनों संस्कृतियों का संचार होता रहा, इस शोध का मतलब उन तमाम बातों की खोज कि ओर है जिस तरह से पश्चिम तथा मध्य एशिया से आनेवाली आक्रमक जातियों के द्वारा स्थापित सत्ता, भाषा और साहित्य के विकास में किस प्रकार से योगदान किया।, लेकिन भी०ए० स्मीथ की गर्वोक्ति स्वीकार नहीं किया जा सकता है कि प्राचीन भारत में जो कुछ भी अजूबी और विशिष्ट उपलब्धि थी, वह सब यूनानी देन का प्रभाव है। यह इतिहास का सनातन सत्य रहा है कि जब दो विकसित सभ्यता-संस्कृति एक दूसरे के सम्पर्क में आती है, तो दोनों के बीच समागम आवश्यक हो जाता है। इसमें यूनानियों के उन विशिष्ट बातों को भारतीय ने जो कि पहले से प्रचलित नहीं थी। महाभारत और रमायण की रचना काल ई. पु. दसरी शताब्दी के आस-पास से माना जाता है और इसी काल से यूनानी आक्रमण और आधिपत्य होने का प्रमाण मिला है। अतः भारत के महाकाव्य लेखन पर यूनानी प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता है, प्राचीन यूनान में छठी पाँचवी ईसा पूर्व में महाकावि "होमर" की रचना अस्तित्व में आ गया था।

### संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रोमिला थापर - अशाक और मौर्य साम्राज्य का पतन राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृ०-5, 6
2. वी० ए० स्मीथ - अर्ली हिस्ट्री ऑफ इण्डिया - लंदन - पृ० 113
3. रोमन धीर्समन - हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, एज डिस्क्रीप्ड वाय ग्रीक हिस्टोरियन - पृ०-212, 14

4. गार्ज थोमसन - एशिया एण्ड एथेन्स - लंदन - पृ० 104
5. एच०जी० रोलिसन - ए सोटे कलचर हिस्ट्री ऑफ इण्डिया - लंदन - पृ० 96
6. गार्गी संहिता अनुवाद - कई विद्वान-चैखभा संस्कृत सेरीज, बनारस, खण्ड - 2, पृ० 55, 56
7. मिलिन्द पन्नाह - अनुवाद - पाली स्टडी सेन्टर, लंदन, खण्ड - 47. माल 4. गार्ज थोमसन - प 05. एच०जी० रोलिसन - एस प्रथम - पृ० - 155, 57
8. गार्ज व्यूलर - इण्डियन पेलियोग्राफी - मोती लाल बनारसी दास - बनारस पृ० - 65, 67
9. जेड० ई० हुल्स - इपीग्राफिया इण्डिका खण्ड - प्रथम - पृ० - 85, 87
10. ऐ०के० नारायण - दि इण्डोनीक - बनारस - पृ० - 135, 36
11. कार्ल बेवर - इस्ट एण्ड वेस्ट - लेख - इण्डियन एंटीक्वेरी - खंड - आठवां पृ - 35, 46
12. गार्ज जैकोबी - हेलेनीज्म इन इण्डिया - लंदन - पृ० - 85, 87
13. विन्टरनीज - हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर - खंड - द्वितीय - पृ० - 135, 36
14. आर०सी० मजुमदार - एज ऑफ इम्पिरियल युनिटी - पृ० - 27, 75
15. लुडविंग - ऐ मेसेज टू प्लेटो - न्यूयार्क - पृ० - 35, 36

### Corresponding Author

Surjeet Kumar Singh\*

Research Scholar, Department of Ancient Indian History Archaeology and Culture, University of Mithila, Kameshwaranagar, Darbhanga